रात्री क्लास   ओम शान्ती   4-1-1967

हर एक चित्र पर बैठ समझाना चाहिये तो सब सीख जावेंगें। मुख्य है ही वर्ल्ड की हिस्ट्री और जाग्राफी। भाषा कोई भी हो। अपनी भाषा में वर्ल्ड की हिस्ट्री और जाग्राफी समझा सकतेहो। कहते हैं नां लांग 2अगो। यहां तुम कहेंगें 5000वर्ष पहले देवताओं का राज्य था। ल.न . महाराजा महाराजा महारानी थे। यह एक कहानी है। भारत वासी देवी देवताओं नें राज्य कैसे लिया और कैसे गवायां?गुप्त ही लिया फिर गुप्त ही गंवाया। कोई लड़ाईआद की बात नही है। माया ते हारे हार फिर माया ते जीते जीत। माया कहा जाता है रावण को। क्योंकि इन्होंनें राज्य किया था। भारत में 2।पीढ़ी मशहूर है। अकाले मृत्यु कब वहां नही होती है। इसलिये 2।पीढ़ी कहा जाता है। बाप जीत पहनाते हैं गुप्त रीत। फिर आधा कल्प बाद 5विकारों रूपी रावण सें हराया। अर्थात 5विकारों में फंस गये। आधा कल्प फसतें सीढ़ी उतरते आये। फिर बाप हैं स्वर्ग का रचियता उनको कहा जाता है हैवनली गाड फादर। तो मनुष्यों को पवित्र बनाते होगें। क्यों कि वहां होतें ही है निरविकारी। विकारी बनने सें हार, निरविकारी बनने सें जीत। कितना सहज समझाया जाता है। बाप के बच्चे बने हो तो बाप की श्रीमत पर चलना पड़े। यह है ईश्वरिय देवी मिशनरी। दैवी धर्म स्थापना की मिशनरी। बाप बैठ बच्चों दवारां स्थापना करते हैं कराते हैं। करन करावन हार कहा जाता है। मूल बात है देही अभिमानी बनने की। क्यों कि आधा कल्प रावण राज्य में देह अभिमानी रहे है। सतयुग में बल देही अभिमानी रहते परन्तु बाप का पता नही रहता है। अभी तुम बाप को जानतेहो। तुमको कितनी खुशी होनी चाहियें। दादे का वर्सा भी बहुत सहज है। भारत में बिलकुल मशहूर है। तुम सब का हक लगता है। तुम सब आत्मायें हो। इसलिये सब ब्रदर्स हो। सबको हक है बाप सें वर्सा पाने का। सतयुग में सभी आत्मायें सुखी बन जाती हैं। बाकी सब शान्ती में रहती है। बाप आकर सुख और शान्ती की स्थापना करते है। कोई भी देह धारी सुख शान्ती नही स्थापन करते हैं। यह आलौकिक कर्तव्य एक बाप के बिना और कोई कर नही सकतें। सदगती दाता वा जीवन मुक्ति दाता देहधारी हो नही सकता। उनको विदेही विचित्र कहा जाता है। अवतरण गाया भी हुआ है। शिव रात्री कहते है। निराकार की रात्री कैसे होती है कोई भी नही जानते। छोटी-2बच्ची तुम हाईस्टेट पोजीशन वालों को बैठ समझाती हो। बच्चों को वेस्ट आफ टाइम नही करना चाहिये। कुछनां कुछ टाइम निकाल सर्विस में लगाना चाहिये। पवित्र तोरहना ही है। मुश्किल क्या बात है। कोई पानी पर पैदल जाते है। तो पुरुषार्थ करने सें हो सकता है नां। परन्तु फायदा कुछ भी नही। यहां पर बहुत फायदा है। बाप समझा देते है इस याद में माया बहुत विघ्न डालेगी। ज्ञान तो बहुत सहज है। हमने ऐसे 84जन्म लिये है यह भी एक जैसे कि कहानी है। कुछ तकलीफ नहीं है। बाप जानते है भक्ति मार्ग में इन्होनें बाप सें मिलने लिये बहुत धक्के खायें है। कहते भी है भगवान कोई नां कोई रूप में कब नां कब मिल जावेंगें। बातें बहुत सुनाते है कि ।तुम किसीको कहो भक्ति सें दुर्गती होती है तो गुस्से हो जावेंगें। और कहते हैः- भक्तों को भगवान आकर सदगती देते हैं। तो भक्ति सें दुर्गती हुई नां। बाप युक्तियां बहुत समझाते है। ओम्शान्ती

4-1-1967रात्री क्लासः- चित्र बनाने वालों के लिये बाबा डायरेक्शन देते रहते है! चित्र ऐसी युक्ति सें रैगज़िन पर वा कपड़े पर बनाओ। जो खराब नां हो। कोई को कान्टैक्ट दे दो। तो झटचित्र बन जावेंगे। बाबा को तो चित्रबहुत चाहिये। सर्विस एबुल बच्चे बहुत चाहियें। बच्चे मिड्गैटस बन गये हैं। सर्विस में खड़े नही होते। बंधन कहते कहते टाइम वेस्ट नां करना चाहिये। बंधनको उड़ा देना पड़ता है। अपना और बहुतों का जीवन बनाना है। आसुरी की ज़ंजीरों में अपने को फंसाना नही है। अगर वो जीवन नही बनाते है तो हम क्यों उनके पीछे अपनी जीवन को गंवायें। गाली तो खानी ही पडेगी। इसमें सख्त दिल बनना होता है। बरीयस सख्त दिल होते है। इसमें बहादुर दिल चाहिये। हंस बगले इकठे बहुत मुश्किल रह सकते हैं। अपना जीवन तो बनाना हैनां। अभी अजुन सर्विस हीं कहां हुई है। लाखों सैन्टर्स बनने चाहिये। बनाने भी जरूर हैं। नही तो इतनी राजधानी कैसे स्थापन होगी। जितना हो सकें सबको रास्ता बताने का पुरुषार्थ करते रहो अन्धों की लाठी बनों। ओम